Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

शैव परम्पराओं के माध्यम से सामाजिक एकता और धार्मिक सहिष्णुता का विकास (बिलासपुर जिले के विशेष संदर्भ में)

डॉ. अंजू तिवारी* महेन्द्र कुमार दुबे**

* सह प्राध्यापक, सामाजिक विज्ञान विभाग (इतिहास) डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय, करगी रोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत
** शोधार्थी, सामाजिक विज्ञान विभाग (इतिहास) डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय, करगी रोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – भारत में धार्मिक परम्पराएँ न केवल व्यक्तिगत आस्थाओं का प्रतिबिंब है, बल्कि समाज के सांस्कृतिक और सामाजिक ताने-बाने को भी आकार देती है। शैव परम्पराएँ, जो शिव भगवान की उपासना पर आधारित है। भारतीय समाज में सदियों से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। यह परम्परा नकेवल धार्मिक आस्थाओं को प्रकट करती है। बल्कि सामाजिक एकता और धार्मिक सहिष्णुताके संवर्धान में भी अहम योगदान देती है। शैव परम्पराएँ विभिन्न जातियों समुदायो और वर्ग को एक साथ लाने में सहायक रही है। शिव की उपासना का सार्वभौमिक पहलू इस परम्परा को एकता का प्रतीक बनाता है जिससे समाज के विभिन्न वर्गों और धार्मो के बीच सहयोग और समझ को बढ़ावा मिलता है। शैव धर्म में न केवल हिंदू धर्म के अनुयायी, बल्कि बौद्ध, जैन और अन्य धार्मिक समुदायों के लोग भी शामिल हुए हैं, जो धार्मिक सहिष्णुता का एक जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इस शोध में शैव परम्पराओं के सामाजिक और धार्मिक प्रभावी का विश्लेषण किया जाएगा जिसमें यह देखा जाएगा कि किस प्रकार शैव उपासना ने भारतीय समाज में धार्मिक भिन्नताओं के बावजूद एकता और सहिष्णुता को बढ़ावा दिया। यह अध्ययन यह भी दर्शाएगा कि शैव धर्म ने सामाजिक न्याय, समानता और मानवता के मूल्यों को स्थापित करने में किस तरह की भूमिका निभाई।

शब्द कुंजी – शैब परम्पराएँ, सामाजिक एकता, धार्मिक सहिष्णुता भारतीय समाज शिव पूजा धार्मिक विविधाता।

प्रस्तावना – भारत का धार्मिक और सांस्कृतिक इतिहास विविधताओं से भरा हुआ है। इस विविधता में विभिन्न आरथाएँ, संस्कृतियाँ और जीवन पद्धतियों समाहित है, लेकिन भारतीय समाज में इन भिन्नताओं के बीच एकता और सहिष्णुता की भावना भी हमेशा जीवित रही है। शैव परम्परा, जो शिव भगवान की उपासना पर आधारित है, भारतीय समाज के विभिन्न हिस्सों में सामाजिक एकता और धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विशेष रूप से छत्तीसगढ़ राज्य का बिलासपुर जिला, जहा विभिन्न जातियों, पंथों और संस्कृति का मिश्रण देखा जाता है। यहीं की परम्पराओं ने सदियों से इन विविधताओ के बीच सामंजस्य स्थापित करने में योगदान दिया है। बिलासपुर जिले में शैव परम्परा प्राचीन समय से ही प्रचलित रही है. और इनकी उपासना का एक गहरा सामाजिक और धार्मिक प्रभाव इस क्षेत्र के लोगों के जीवन पर पड़ा है। शिव के भक्तों की संख्या में बढ़ोतरी और उनकी उपासना के विविध रूपों ने न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से समाज को एकजुट किया, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी लोगों के बीच समानता और भाई चारे की भावना को प्रोत्साहित किया। यह परम्परा यहीं के विभिन्न समुदायों जातियों और धर्मो के बीच संवाद और सहिष्णुता का कारण बनी। शिव की पूजा के विविध रूपों ने भारतीय सम्माज के भीतर एकता और समरसता की भावना को मजबूत किया, जिससे समाज में भेदभाव और असमानता को कम करने में मदद मिली बिलासपुर जिले की शैव परम्परा विशेष रूप से इस क्षेत्र में शिव भक्तों के द्वारा निभाए जाने वाले अनुष्ठानों, मंदिरों और धार्मिक अनुष्ठानो से जुड़ी हैं। यहीं के शैव मंदिर जिनमें खासकर शिव के प्रमुख मंदिर जैसे रतनपुर का महामाया मंदिर और स्थानीय धार्मिक स्थलों ने क्षेत्रीय एकता को बनाए रखा।

इन मंदिरों में होने वाली भव्य पूजा-अर्चना और धार्मिक उत्सवों में विभिन्न जातियों और वर्गों के लोग मिलकर हिस्सा लेते हैं. जो सामाजिक समरसता का प्रतीक है। शैव परम्परा में शिव को न केवल एक देवता के रूप में पूजा जाता है, बल्कि उन्हें सर्वशक्तिमान और ब्रह्म के रूप में भी देखा जाता है, जी इसी विचारधारा को प्रबल करता है कि भगवान के सामने सभी इंसान समान है और किसी भी जाति या वर्ग के बीच भेदभाव नहीं होना चाहिए।

बिलासपुर जिले में स्थापित शिव मंदिर जैसे ताला गांव शिव मंदिर मल्हार का शिव मंदिर यह प्राचीन शिव मंदिर है। तथा स्थानीय राजवंश भी व संप्रदाय को मानते थे। व परम्पराओं के माध्यम से धार्मिक सहिष्णुता का संदेश इस जिले में कई तरह से फैलाया गया।

शैव संप्रदाय का ऐतिहासिक पृष्ठीभूमि– शैव संप्रदाय जो भगवान शिव की उपासना पर आधारित है. भारतीय धर्म और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। इसका इतिहास अत्यंत पुराना है और इसका विकास समय-समय पर विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक प्रवृतियों से प्रभावित हुआ। शैव परंपरा की जड़े वेदों उपनिषदों और पुराणों में मिलती हैं। लेकिन यह एक सम्पूर्ण धार्मिक परंपरा के रूप में भारतीय समाज में विशेष स्थान प्राप्त करने के लिए समय के साथ आकार लेने लगी। शैव सम्प्रदाय का विश्लेषण निम्न प्रकार से कर सकते है-पाशुपत शैव सम्प्रदाय यह शैव सम्प्रदाय का सबसे प्राचीनतम सम्प्रदाय है। इसकी उत्पति ई.पू. दूसरी शती में हुई थी। इसके

संस्थापक लकुलिश थे। महाभारत में इसका उल्लेख सांख्य योग, पंचरात्र के साथ हुजा है। उमापति, भूतनाथ शिव श्री कठा ने पाशुपत शैव की शिक्षा दी। अर्थात इस मत का संस्थापक कोई मनुष्य नहीं था। भण्डारकर महोदय ने पौराणिक एवं अभिलेखनीय तथ्यों के आधार पर शिय के 28 वीं अवतार लकुलिश को इस मत का सस्थापक माना है। वायुपुराण और लिगं पुराण के आधार पर भण्डारकर महोदय का विचार है कि महान व संत लकुलिश महेश्वर के अन्तिम अवतार थे, जिन्होंने कायावरोहण अथवा कायावतार (गुजरात के बड़ौदा जिला के दभीई तालुक में कारवान लिया था। उनको चार शिष्य यी। जिनका नाम था कुशिक गर्ग, मित्र और कौरुष्य उपनिषदों में भगवान शिव की अवधारणा और अधिक स्पष्ट हुई। तैतिरीय उपनिषद और श्काठक उपनिषद में रुद्र का संदर्भ मिलता है, जो बाद में शिव के रूप में प्रतिष्ठित हुए। शिय को ब्रहार या स्थादिशक्तिर के रूप में परिभाषित किया गया, जो सम्पूर्ण सृष्टि का रचनाकार, पालनकर्ता और संहारक है। उपनिषदों में शिय की शरण में जाने की सर्वोत्तम साधना माना गया और उनकी उपासना को जीवन का सर्वोत्तम उद्देश्य बताया गया।

छत्तीसगढ़ में कई ऐतिहासिक और पुरातात्विक स्थल है जो पर्यटन के दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। ये स्थल राज्य के समृद्ध इतिहास को दर्शाते हैं। सिरपुर नामक स्थान पर बगवान बुद्ध का आगमन हुआ था और सम्राट अशोक ने यहां स्तूप भी बनवाया था। बीपावी नामक स्थान पर खुदाई में कई मंदिरों के अवशेष मिले है जो शाक्य और शैव समुदाय से संबंधित है। यहां स्थित मोरनदेव मंदिर की तुलना खजुराहों के मंदिरों से की जाती है। मल्हार में तामकाल से लेकर मध्यकाल तक का व्यवस्थित इतिहास मिलता है। देवबलीदा दुर्ग में एक प्राचीन शिव मंदिर है। तालामाल में स्थित देवरानी जेठानी मंदिर गुप्तकाल की स्थापत्य कला को प्रदर्शित करते हैं। बारसूर स्थान अपनी विशाल गणेश प्रतिमा के लिए प्रसिद्ध है और यहां छिंदक नागवंश का शासन था। इन सभी स्थलों के माध्यम से हम छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक और सास्कृतिक धरोहर को समझ सकते है।

शैव धर्म का विकास – भगवद्गीता में भगवान शिव का नाम सीधे तौर पर नहीं लिया गया है, लेकिन गौता के श्लोकों में जो परम ब्रह्म और अस्तित्व की स्थिति का वर्णन किया गया है, वह शिव की अवधारणा से मेल खाता है। भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है कि वह सर्वशक्तिमान ब्रहा है. जो सभी देवताओं का आदिशक्ति है। शैव साम्याय की दृष्टि से, भगवान शिव को भी ब्रा के रूप में पूजनीय माना गया है।

पुराणों में शिव की प्रतिष्ठा – पुराणों में शिव की उपासना का विस्तार हुजा और उन्हें महादेव नटराज, शंकर और पार्वती पति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। विशेष रूप से शिवपुराण और लिंगपुराण में शिवको सर्वोच्च देवता के रूप में पूजा गया है। शिवपुराण में शिव की उत्पत्ति, उनके परिवार, उनके महान कार्यों और उनके उपासको के बारे में विस्तृत विवरण मिलता है। शिव की उपासना को श्रेष्ठतम साधाना और मुक्ति प्राप्ति का मार्ग माना गया है।

द्वितीय शताब्दी से छठी शताब्दी तक का समय – द्वितीय शताब्दी से छठी शताब्दी तक भारत में सैम सामप्रदाय का समृद्धि काल था। इस समय शैव धर्म का प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में उमार हुआ और विशेषकर दक्षिण भारत में सैव भक्ति आंदोलन ने जोर पकड़ा। अक्कोय, कंबन और टिरुनेलवेली के गैव संतों ने भगवान शिव के प्रति मक्ति का प्रचार किया। यह समय शिव भक्ति के उत्कर्ष का था और अनेक गैद मतों और मंदिरों का निर्माण हुआ।

मध्यकाल में शैव संप्रदाय का फैलाव – मध्यकालीन में शैव संप्रदाय का व्यापक विस्तार हुआ। इस समय में शंकराचार्य का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। शंकराचार्य ने अद्वैत वेदांत की अवधारणा को स्थापित करते हुए शिव को सर्वोच्च महा माना। इसके साथ ही उन्होंने शैव परंपरा को एक वैदिक और सास्कृतिक धारा में पिरोने का कार्य किया। इस समय में शैव मठों और धार्मिक केंद्रों का विकास हुआ और शिव को केवल एक देवता के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यापक ब्रह्म के रूप में पूजा जाने लगा। भक्ति कालीन संत ईश्वर की सर्वशक्तिमान मानते थे। वे विभिन्न देवी–देवताओं की उपासना के स्थान पर एक ईश्वर में विश्वास करते थे। कुछ संत राम और कृष्ण उपासना करते थे परंतु वे उनमें किती प्रकार का भेदभाव नहीं करते कुछ संत निर्गुण बा की उपासना करते थे और कुछ सगुण ब्रह्म की। वे राम रहीम में अंतर नहीं करते थे।

आधुनिक काल में शैव संप्रवाय – आधुनिक काल में शैव संप्रदाय ने भारतीय समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी रीय संप्रदाय के संतों ने भारतीय समाज में समानता, एकता और भाईचारे का संदेश दिया। शिव की उपासना से जुडी सामाजिक और धार्मिक परपराएँ आज भी भारतीय समाज में जीवित है और यह सुनिश्चित करती है कि शिव का संदेश हर वर्ग और समुदाय तक पहुंचे।

शोध का समस्या विवरण – इस शोध का समस्या विवरण होगा शिव (संवाद) की पूजा और भक्ति के इतिहास पर विचार करना, इस उद्देश्य के साथ कि यह मूल्यांकन किया जा सके कि क्या शिद को मेटा–मॉडर्न युग में जिसमें मजहा धर्मनिरपेक्ष प्रवृत्तियों है. पूजा जाता रहेगा या नहीं। क्या विवाद इतिहास और पोस्टमॉडर्न युग के समान मेटा–मीशन युग में भी जीवित रहेगा? हालांकि विवाद ने इन युगों में जीवित रहने और अपनी पहुँच की हाल के वर्षों में पूर्व से पश्चिम तक बढ़ाने में सफलता प्राप्त की है. क्या यह मेटा–मॉडर्न युग में धर्मनिरपेक्षता की चुनौतियों का सामना करते हुए जैसे है, वैसे ही जीवित रहेगा? यह तर्क किया जाता है कि यदि शैववाद, जो हिंदू धर्म के सबरी बड़े संप्रदायों में से एक है, मेटा–मॉडर्न महता की आवश्यकताओं के अनुसार अपने आप को अनुकूलित नहीं करता तो भगवान शिव को अपने अनुयाविथों की एक बड़ी सख्या खोनी पड़ सकती है। हालांकि, यह परिकल्पना, जो शैववाद के इतिहास और शैवों द्धारा विपत्तियों को पार करने की क्षमता पर आधारित है. यह है कि शिव भक्त यह सुनिश्चित करेंगे कि शैववाद समकालीन नेटा–मदने धर्मनिरपेक्ष युग में वैश्विक स्तर पर फलता–फूलता सोमा।

धार्मिक सहिष्णुता का अर्थ– धार्मिक सहिष्णुता का अर्थ विभिन्न धर्मों के प्रति आदर एवं प्रेम के भाव का प्रदर्शन करना है। मानव की सबसे बड़ी दुर्बलता यह है किवह अपने धर्म को श्रेष्ठ और दूसरे के धर्म को तुच्छ समझता है। जिसके फलस्वरूप धर्म को लेकर संघर्श होते रहते हैं। धार्मिक सहिष्णुता इस संघर्ष को रोकने के लिए विभिन्न धर्मों के प्रति सहनशीलता के दृष्टिकोण को प्रथम देने का काम करती है। महात्मा गाँधी भी मानते हैं। कि धार्मिक सहिष्णुता अहिंसा के सिद्धांत का प्रतिफल है। धार्मिक सहिष्णुता सभी धर्मों के प्रति उदारता की सावना को प्रचय देती है।

धार्मिक सहिष्णुता का सामाजिक एकता में योगदान – धार्मिक सहिष्णुता का खमाजिक एकता में इसका योगदान निम्न प्रकार से है:

1. धार्मिक सहिष्णुता आधुनिक समाज की नींव है, जो राभी समुदायों को समान रूप से शामिल होने का अवसर प्रदान करती है। यह नागरिकों

के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए अत्यंत आवश्यक है।

2. धार्मिक सहिष्णुता के कारण समाज में विभाजन और संघर्षों में कमी आती है। यह युवाओं में एकता और भाईचारे की भावना को प्रोत्साहित करती है।
3. सहिष्णुता से समाज में हिंसा और पूष्णा में कमी आती है, जिससे समाज में शांति बनी रहती है।
4. धार्मिक अल्पसंख्यकों के प्रति भेदभाव पूरे समाज को नुकसान पहुंचाता है और सामाजिक समरसता को बाधित करता है।
5. पानिक असहिष्णुता की स्थिति में वसुधैव कुटुम्बकम की भावना कमजोर हो जाती है जिससे एकता पर प्रभाव पड़ता है।
6. चार्मिक असहिष्णुता के परिणाम स्वरूप आतंकवाद और नरसंहार जैसी हिंसक नीतियों का विकास होता है।

अध्ययन क्षेत्र – बिलासपुर जिले का इतिहास लगभग 400 साल पुराना है. और इसका निर्माण कलमुरी शासकों ने किया था। इस जिले का नाम एक मछुआरी महिला, बिल्लात्ता बाई के नाम पर रखा गया, यह जिला मैकल श्रेणी के पूर्वी भाग में स्थित है. जो प्राकृतिक संसाधानों से समृद्ध है। जिले का उत्तारी अक्ष 21.470 से 23.80 और पूर्वी देशातर 81 140 से 83.150 के बीच स्थित है। बिलासपुर जिले का गठन 1861 में हुआ था, जब यह मध्याति का हिस्सा था। इसके बाद 1956 में देश की आजादी के बाद बिलासपुर को एक संभाग के रूप में स्थापित किया गया। बिलासपुर संभाग में कुल आठ जिले शामिल है। इस जिले का कुल क्षेत्रफल लगभग 3508.48 वर्ग किलोमीटर है और यहां की कुल आबादी 16,25.502 है।

अध्ययन का उद्देश्य:

1. शैव परम्पराओं के माध्यम से बिलासपुर जिले में सामाजिक एकता को प्रोत्साहित करना।
2. धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देने में जैव परम्पराओं की भूमिका का अध्ययन करना।
3. बिलासपुर जिले में शौच परम्पराओं के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव को समझना।
4. जैव परम्पराओं के प्रभाव से समाज में सकारात्मक बदलावों की पहचान करता।

निष्कर्ष– बिलासपुर जिले में व परंपराओं ने न केवल धार्मिक आस्था की प्रगाढ़ किया, बल्कि सामाजिक एकता और धार्मिक सहिष्णुता के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जैव परंपरा की गहनी जड़े इस क्षेत्र में धार्मिक और सास्कृतिक परंपराओं के संरक्षण में योगदान करती है। शेष धर्म ने न केवल अपने अनुयायियों को एकजुट किया, बल्कि विभिन्न समुदायों के बीच सामूहिक समन्वय और सहिष्णुता को बढ़ावा दिया। बिलासपुर जिले में शैव मंदिरों और उनके मार्मिक आयोजनों ने विभिन्न धार्मा और जातियों के लोगों को एक मंच पर लाने का कार्य किया। शेव परंपरा में शामिल भक्ति और साधाना ने व्यक्ति को जान-निर्भर और सामूहिक रूप से समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रेरित किया। इसके साथ ही, रौप संप्रदाय ने सदियों से क्षेत्रीय विविधाओं और मिन्नताओं को समेटते हुए धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा दिया, जिसते समाज में सामाजिक एकता को बल मिला। इस परंपरा की शिक्षाएं और आदर्शी ने न केवल स्थानीय स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर भी शांति और सौहार्द की भावना को मजबूत किया है। इस प्रकार शैव परंपरा का धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिक एकता के विकास में अत्यधिक योगदान रहा है. और यह आगे भी बिलासपुर जिले के सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिक्ष्य में महत्वपूर्ण स्थान बनाए रखेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. राम नरेश (2020) पूर्व मध्यकालीन भारत में धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एक समीक्षा. International Journal of Advanced Academic Studies] 2(4) पृष्ठ क्रमांक-210
2. ओवेतीरो साइयों और तलाबी मोचिनीलुवा (2023) धार्मिक सहिष्णुता राष्ट्रीय विकास का एक साप्पन Edumania & An International Multidisciplinary Journal. 01(02): पृष्ट कमांक-15
3. गुरुपच कुबेर सिंह (2023) छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थलों का भौगोलिक अध्ययन एवं माता International Journal of Advances in Social Sciences, 11(04) पृष्ठ क्रमांक-261
4. रानां कविता (2020) धर्म एवं आका विकारा Internatioal Journal of Hindi Research 6(6): पृष्ट क्रमांक-154
5. द्धिगादर्शी अर्चना (2021) दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में शैव समादाय का उदभव एवं विकास Jouranl of Emerging Technologies and Innovative Research- 8(6): पृष्ठ क्रमांक 2430
6. https:www.britannica.com/topic/Shiva
7. https:rkarts.blogspot.com/2016.01.blog&post 23 himl
8. https:study.com.academy.lesson.shaivism overview origin beliefs.html
9. शर्मा कविता (2020) धर्म एवं जागा विकास Internatioal Journal of Hindi Research] 6(6): पृष्ठ क्रमांक-154
10. कुमारी सुनिता, एट ऑल (2014) विश्वशांति में बार्मिक सहिष्णुता का योगदान, EÛplore&Journal of Research for UG and PG students. 6: पृष्ठ क्रमांक-70
11. हसन शेख तेज (2023) सल्तनत कालीन भारत के धार्मिक जीवन का विश्लेषण Anthology theresearch. 7(12): पृष्ठ क्रमांक-4
12. सिंह विशाल विक्रम (2018) चन्देल वंश में शैव धर्म का विकास एक अध्ययन Research Guru: Online Joural of Multiciscipliary Subject (peer Reviewed) 12-1-: पृष्ट प्रक्रमांक-1152
13. जुनमुगम् मणियास यूपान और सुकदावेन मणिराया (2010) शेप धर्म महादेव के इतिहास और भविष्य पर एक चिंतन शोध प्रबंध धर्मशास्त्र में स्नातकोत्तर पर्म का विज्ञान, पृष्ठ कमन्नश्व -11
14. कुमारी सुबिता, एट ऑल (2014) विश्वशांति में धार्मिक सहिष्णुता का योगदान, EÛplore&Journal of Research for UG and PG students- 6: i`"B क्रमाक-70
15. https:www.scielo.org.za/scielo-php\script/sci arteÛt&pid/50259&94222022000400008
16. https:Bilaspur.gov.in/en/

****